(44) (12 Pages) 5T.Copies

एम.एच.डी.

एम.ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2012 एवं जनवरी 2013 सत्रों के लिए)

एम.एच.डी-1 : हिंदी काव्य-1
एम.एच.डी-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी-7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान
एम.एच.डी-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी-14 : हिंदी उपन्यास-1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी-15 : हिंदी उपन्यास-2
एम.एच.डी-16 : भारतीय उपन्यास

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

५५

सत्रीय कार्य-2012-13

कार्यक्रम कोड : एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें निम्नलिखित सातों पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं :

एम.एच.डी.-1 : हिंदी काव्य-1
एम.एच.डी.-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी.-7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान
एम.एच.डी.-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी.-14 : हिंदी उपन्यास-I (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी.-15 : हिंदी उपन्यास-II
एम.एच.डी.-16 : भारतीय उपन्यास

एच.एच.डी.-5 पाठ्यक्रम 8 क्रेडिट का है। शेष सभी पाठ्यक्रम 4-4 क्रेडिट के हैं। प्रत्येक पाठ्यकम के लिए आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए "विवेचना" नाम से आलोचनात्मक आलेखों के संग्रह भेजे गए हैं। एम.एच.डी-1 में "विविधा" नामक पुस्तक भी भेजी गई है।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा के सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपका अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि, रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

	अनुक्रमांक : ....
	नाम : ....
	पता : ....
पाठ्यक्रम का नाम/कोड :	....
सत्रीय कार्य कोड :	....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड :	दिनांक : ....

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।

५५

5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6. अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।

7. सत्रीय कार्य की उत्तर पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के संचालक के पास **जुलाई 2012 सत्र के लिए 31 मार्च 2013 एवं जनवरी 2013 सत्र के लिए 30 सितंबर 201**3 तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें :

1. आपकी सत्रांत परीक्षा तीन घंटे की होगी और प्रत्येक सत्रीय कार्य भी तीन घंटे में किए जा सकने की दृष्टि से तैयार किए गए हैं। इसलिए सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हुए इस बात का ध्यान रखें कि सभी प्रश्नों के उत्तर तीन घंटे में लिखे जा सकें।

2. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें। आपका उत्तर सुसंगत, सुबोधगम्य और स्पष्ट हो।

3. व्याख्या से संबंधित अंशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा, शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।

4. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

५५

एम.एच.डी-1 : हिंदी काव्य-1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

सत्रीय कार्य

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी-1/टीएमए/2012-13
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिएः** **10×4=40**

क) मोकों कहाँ ढूढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया–कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहों, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।

ख) का सिंगार ओहि बरनौं, राजा। ओहिक सिंगार ओहि पै छाजा।।
प्रथम सीस कस्तूरी केसा। बलि बासुकि का और नरेसा।।
भौंर केस वह मालति रानी। बिसहर तुरे लेहिं अरघानी।।
बेनी छोरि झार जौं बारा। सरग पतार होइ अंधियारा।।
कोंवर कुटिल केस नग कारे। लहरन्हि भरे भुअंग बेसारे।।
बेधे जनौं मलयगिरि बासा। सोस चढ़े लोटहिं चहुं पासा।।
घुंधरवार अलकैं विषभरी। सँकरे पेम चहैं गिउ परी।।

ग) झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छवै।
हँसि बोलन मैं छबि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल–कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहे मनौ रूप अबै धर च्वै।

घ) फागु के भीरे अभीरन तें गहि गोबिंद लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर ऊपर नाई अबीर की झोरी।
छीन पितंबर कंमर तें सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाइ कह्यो मुसकाइ लला फिरि आइयौ खेलन होरी।

2. **निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिएः** **15 x 3 = 45**

क) 'पृथ्वीराज रासो' की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
ख) कबीर के काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना का विश्लेषण कीजिए।
ग) कवि के रूप में तुलसीदास का मूल्यांकन कीजिए।

3. **निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिएः** **5 x 3 = 15**

क) सूर काव्य में वात्सल्य वर्णन का उल्लेख कीजिए।
ख) घनानंद के काव्य में प्रेम के स्वरूप को उद्घाटित करने वाले किसी एक प्रसंग का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।
ग) पद्माकर के काव्य में लोक जीवन के चित्रण का वर्णन कीजिए।

५५

एम.ए.डी.-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना

एम.एच.डी.-5, एम.म. हिंदी के द्वितीय वर्ष का अनिवार्य पाठ्यक्रम है।"साहित्य सिद्धांत और समालोचना" शीर्षक इस पाठ्यक्रम में आपने प्राचीन भारतीय साहित्य-चिंतन, पश्चिमी साहित्य चिंतन और हिंदी ओलोचना का अध्ययन किया है। इस पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य पूरे पाठ्यक्रम पर आधारित है।

इस सत्रीय कार्य में आपको कुल नौ प्रश्न करने हैं - नौ निबंधात्मक प्रश्न तथा एक टिप्पणीपरक प्रश्न। टिप्पणीपरक प्रश्न में आपको दो विषयों पर टिप्पणियाँ लिखनी हैं। आपकी सत्रांत परीक्षा का ढाँचा भी कुछ हद तक इसी प्रकार का होगा। फर्क केवल इतना है कि यहाँ सभी प्रश्न अनिवार्य हैं, जबकि सत्रांत परीक्षा में आपके पास विकल्प होगा यानी कि आपको आठ-दस प्रश्नों में पाँच का उतर देना होगा। साथ ही आपसे पूछे गए प्रश्नों की संख्या इतनी होगी कि निर्धारित समय में आप उत्तर दे सकें।

सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एमएचडी-05
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी-5/टीएमए/2012-13
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. काव्य लक्षण से क्या तात्पर्य है? संस्कृत और हिंदी में काव्य लक्षण संबंधी चर्चा का उल्लेख कीजिए। 10

2. काव्य प्रयोजन संबंधी भारतीय और पश्चिमी विचारों की चर्चा कीजिए। 10

3. ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाओं पर विचार कीजिए। 10

4. रस निष्पत्ति के विषय में भट्ट लोल्लट, भट्ट नायक और अभिनव गुप्त के विचारों का उल्लेख कीजिए। 10

5. अनुकरण के बारे में प्लेटो और अरस्तू की मान्यताओं का अंतर स्पष्ट कीजिए। 10
6. वर्ड्सवर्थ की काव्य परिभाषा की विशेषताओं का निरूपण कीजिए। 10

7. वक्रोक्तिवाद और अभिव्यंजनावाद का साम्य--वैषम्य स्पष्ट करते हुए अभिव्यंजनावादी समीक्षा पद्वति पर प्रकाश डालिए। 10

8. नयी समीक्षा के प्रमुख स्रोत, उसके युग परिवेश की चर्चा करते हुए उसके प्रमुख समीक्षकों के विचारों का सार लिखिए। 10

9. आई.ए रिचर्ड्स के भाषा सिद्धांत और मूल्य सिद्धांत पर प्रकाश डालिए। 10

10. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए: 5+5=10
(क) स्वच्छंदतावाद
(ख) आधुनिकतावाद और उत्तर आधुनिकता।

५५

एम.एच.डी.–7 : भाषाविज्ञान और हिन्दी भाषा

सत्रीय कार्य

(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–7
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–7/टीएमए/20012-13
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 800-1000 शब्दों में दीजिए : 15X4=60

1 भारत में भाषा चिंतन में वाक्, वाक्य और क्रिया की संकल्पना पर प्रकाश डालिए।

2 रूपिम की संकल्पना स्पष्ट करते हुए शब्द निर्माण में इसकी भूमिका बताइए।

3 स्वर की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए हिंदी की स्वर-ध्वनियों का वर्गीकरण कीजिए।

4 भाषा शिक्षण की प्रमुख विधियों का परिचय दीजिए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 400-500 शब्दों में दीजिए : 10X3=30

1 भाषा और बोली का अंतःसंबंध

2 संप्रेषण का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

3 वाक्य संरचना

(ग) निम्नलिखित पर लगभग 200-250 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए। 5X2=10

1 भाषा और संप्रेषण

2 संपर्क भाषा

55

एम.एच.डी.–13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास

सत्रीय कार्य

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.-13
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–13/टीएमए/2012-13
कुल अंक : 100

नोटः **निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

1. उपन्यास और अन्य गद्य विधाओं के पारस्परिक संबंधों पर प्रकाश डालिए। 15

2. उपन्यास विधा के संदर्भ में चरित्र-चित्रण की विभिन्न पद्धतियों का उल्लेख कीजिए। 15

3. उन्नीसवीं सदी के रूसी उपन्यास विषय पर निबंध लिखिए। 15

4. स्वातंत्र्योत्तर भारतीय उपन्यास की प्रमुख प्रवृत्तियों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 15

5. हिन्दी उपन्यासों पर नवजागरण के प्रभाव की समीक्षा कीजिए। 15

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियां लिखिए : 5X5=25

   क) हिन्दी उपन्यासों में स्त्री-चेतना
   ख) भारतीय उपन्यासों में जातीय भावना
   ग) चार्ल्स डिकेन्स के उपन्यासों में यथार्थवाद
   घ) उपन्यास में भाषा की भूमिका
   ङ) उपन्यास में देशकाल

५५

एम. एच. डी.- 14
हिन्दी उपन्यास -1
(प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः एम एच डी -14
सत्रीय कार्य कोड : एम एच डी -14/टी एम ए/ 2012-2013
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10×4=40

(क) मैने तो हिन्दी साहित्य को पढ़ना ही छोड़ दिया। अनुवादों को निकाल डालिए, तो नवीन हिन्दी साहित्य में हरीशचन्द्र के दो-चार नाटकों और चन्द्रकान्ता सन्तति के सिवा और कुछ रहता ही नहीं। संसार का कोई साहित्य इतना दरिद्र न होगा। उस पर तुर्रा यह है कि जिन महानुभावों ने दो-एक अंग्रेजी-ग्रन्थों के अनुवाद मराठी और बंगला अनुवादों की सहायता से कर लिए, वे अपने को धुरन्धर साहित्यज्ञ समझने लगे हैं। लेकिन वे अपने को हिन्दी का कालिदास समझते हैं। एक महाशय ने "मिल " के दो ग्रन्थों का अनुवाद किया है और वह भी स्वतन्त्र नहीं, बल्कि गुजराती, मराठी आदि अनुवादों के सहारे ; पर वह अपने मन में ऐसे सन्तुष्ट हैं; मानो उन्होंने हिन्दी साहित्य का उद्धार कर दिया। मेरा तो यह निश्चय होता जाता है कि अनुवादों से हिन्दी का उपकार हो रहा है। मौलिकता को पनपने का अवसर नहीं मिलने पाता

(ख) आप इस त्रिमूर्ति को देखकर चौंकते होंगे। पर मेरे लिए यह मिट्टी के खिलौने हैं। विषयासक्त आँखें इनके रूप-लावण्य पर मिट्टी हैं, मैं उस ज्योति को देखता हूँ जो इनके घट में व्याप्त है। बाह्य रूप कितना ही सुन्दर क्यों न हो, मुझे विचलित नहीं कर सकता। वह भकुए हैं, जो गुफाओं और कन्दराओं बैठकर तप और ध्यान के स्वाँग भरते हैं। वह कायर हैं, प्रलोभनों में मुँह छिपाने वाले, तृष्णाओं से जान बचाने वाले हैं। वे क्या जानें कि आत्म-स्वातन्त्र्य क्या वस्तु है! चित्त की दृढ़ता और मनोबल का उन्हें अनुभव ही नहीं हुआ। वह सूखी पत्तियाँ हैं, जो हवा के एक झोंके से जमीन पर गिर पड़ती हैं। योग कोई दैहिक क्रिया नहीं है। आत्मशुद्धि, मनोबल और इन्द्रिय-दमन ही सच्चा योग, सच्ची तपस्या है। वासनाओं में पड़कर अविचलित रहना ही सच्चा वैराग्य है।

(ग) शांत विचार के लिए एकाग्रता उतनी ही आवश्यक है, जितनी ध्यान के लिए वायु की गति तराजू के पलड़ो को बराबर नहीं होने देती। विनय को अब विचार हुआ अम्माजी को यह हाल मालूम हुआ, तो वह अपने मन में क्या कहेंगी। मुझसे उनकी कितनी मनोकामनाएँ संबद्ध हैं। सोफी के प्रेम-पाश से बचने के लिए उन्होंने मुझे निर्वासित किया, इसीलिए उन्होंने सोफी को कलंकित किया। उनका हृदय टूट जाएगा। दुःख तो पिताजी को भी होगा; पर वह मुझे क्षमा कर देंगे, उन्हें मानवीय दुर्बलताओं से सहानभूति है।

(घ) वह उन्माद की-सी दशा में अपने कमरे में आई और फूट-फूटकर रोने लगी। वह लालसा जो आज सात वर्ष हुए, इसके हृदय में अंकुरित हुई थी, जो इस समय पुष्प और पल्लव से लदी खड़ी थी, उस पर वज्रपात हो गया। वह हरा-भरा लहलहाता हुआ पौधा जल गया-केवल उसकी राख रह गई। आज ही के दिन पर तो उसकी समस्त आशाएं अवलंबित थीं। दुर्दैव ने आज वह अवलंब भी छीन लिया। उस निराशा के आवेश में उसका ऐसा जी चाहने लगा कि अपना मुंह नोच डाले। उसका वश चलता, तो वह चढ़ाव को उठाकर आग में फेंक देती।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : $12\times4=48$

(क) "प्रेमचंद का सम्पूर्ण उपन्यास साहित्य ब्रिटिश औपनेविशिक शासन के विरोध में खड़ा है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(ख) "सेवा सदन" में निहित समस्याओं का विश्लेषण कीजिए।

(ग) औपन्यासिक शिल्प के आधार पर "प्रेमाश्रम" का मूल्यांकन कीजिए।

(घ) "जालपा" की चारित्रिक विशिष्टताओं का विवेचन कीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : $4\times3=12$

(क) प्रेमचंद की कहानी कला

(ख) बलराज और मनोहर

(ग) रंगभूमि में अंग्रेज़

-

५५

एम. एच. डी.- 15
हिन्दी उपन्यास -2
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः एम एच डी -15
सत्रीय कार्य कोड : एम एच डी -15/टी एम ए/ 2012-2013
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×4=40

(क) लड़की से खामुजा नाराज हैं कि वह जिन्दगी भर की मुसीबत सहेड़ने से इंकार कर रही है। माँ और बड़े भाई कर्त्तव्य पूरा न कर सकने के सामाजिक अपमान से डर रहे हैं। मेरी भी यह स्थिति थी। .... जो लड़कियाँ जीविका कमाने का साहस कर रही हैं वे अपना भाग्य दूसरों के हाथ में क्यों दे दें? अब तो दिल्ली में लड़कियाँ सभी जगह काम करती दिखाई दे रही हैं ....विभाजन से पहले मैं नौकरी कर लेने की कल्पना करती थी तो खास साहस की आवश्यकता जान पड़ती थी पर अब तो साधारण बात है।

(ख) शाह जी ने बात उठा ली - "मौलादाद जी, बड़ी सयानफ़ की बात की है आपने। मनुक्ख बच्चा बनकर धरती का ओढ़न न पकड़े तो धरती माँ क्यों दूध पिलाने लगी! अपने वेद-शास्त्र भी यही कहते हैं कि धरती माँ को आदर-प्यार से सींचा-सराहा न जाए तो माँ के थनों की तरह धरती के सुंब भी पूरी तरह नहीं खुलते। जो सुंब न खुलें तो दूध की धाराएँ तो आप ही रुक गईं।"

कृपाराम ने सिर हिलाया - "अपने शास्त्रों की भी क्या तुलना! ऐसे-ऐसे मोती-माणक भरे पड़े हैं - "कत्हा क़लाम माफ़ कृपाराम, बेशक पोथियाँ-किबातें बयान करती रहें, पर खूबी तो ख़ैरों से धरती की ही हुई न!"

(ग) जब मैंने स्वीकार किया कि मेरे मन में भी यही भावना होती है तो और भी उत्साह में भरकर बोले, "देखो, अगर ज़िन्दगी में फूल न होते, बादल न होते, पवित्रता न होती, प्रकाश न होता, सिर्फ अँधेरा होता, कीचड़ होता, गन्दगी होती तो कितना अच्छा होता! हम सब उसमें कीड़े की तरह बिलबिलाते और मर जाते, कभी अन्तःकरण में किसी तरह की छटपटाहट न होती। लेकिन बड़ा अभागा होता है वह दिन जिस दिन हमारी आत्मा पवित्रता की एक झलक पा लेती है, रोशनी का एक कण पा लेती है क्योंकि उसके बाद सदियों तक अँधेरे में क़ैद रहने पर भी रोशनी की प्यास उसमें भर नहीं पाती, उसे तड़पाती रहती है। वह अँधेरे से समझौता कर ले पर उसे चैन की नहीं मिलती।"

(घ) वेदान्त हमारी परम्परा है और चूँकि गुटबंदी का अर्थ वेदान्त से खींचा जा सकता है, इसलिए गुटबंदी भी हमारी परंपरा है, और दोनों हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ है। आज़ादी मिलने के बाद हमने अपनी बहुत-सी सांस्कृतिक परम्पराओं को फिर से खोदकर निकाला है। तभी हम हवाई जहाज से यूरोप

५५

जाते है, पर यात्रा का प्रोग्राम ज्योतिषी से बनवाते हैं : फॉरेन ऐक्सचेंज और इन्कमटैक्स की दिक्कतें दूर करने के लिए बाबाओं का आशीर्वाद लेते है, स्कॉच व्हिस्की पीकर भगन्दर पालते हैं और इलाज के लिए योगाश्रमों में जाकर साँस फुलाते हैं, पेट सिकोड़ते हैं। उसी तरह विलायती तालीम में पाया हुआ जनतंत्र स्वीकार करते हैं और उसको चलाने के लिए अपनी परम्परागत गुटबन्दी का सहारा लेते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : 12×4=48

(क) अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से यशपाल द्वारा प्रस्तुत उनकी नारी विषयक दृष्टि को स्पष्ट कीजिए।

(ख) "जिन्दगीनामा" उपन्यास की अन्तर्वस्तु के विशेष घटकों पर विचार कीजिए।

(ग) "भारती के दोनों उपन्यासों के पात्र सामाजिक विधि-निषेध से संघर्ष की बजाए अपने अन्तर्द्वन्द्व के शिकंजे में फँसे हुए हैं।" इस कथन की वास्तविकता पर प्रकाश डालिए।

(घ) "राग दरबारी" उपन्यास में शिक्षा संस्था को केन्द्र बनाकर समाज में व्याप्त किन विकृतियों का पर्दाफाश किया गया है?

3. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 4×3=12

(क) "झूठा सच" में चित्रित पुनर्वास का संघर्ष और प्रक्रिया

(ख) "राग दरबारी" में चित्रित पुलिस प्रशासन

(ग) लिली का चरित्र

५५

एम. एच. डी -16 : भारतीय उपन्यास

सत्रीय कार्य

(खंड 1, 2 ,3, और 4 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड - एम. एच. डी -16
सत्रीय कार्य कोड - एम. एच. डी -16/टी एम ए/2012-13
कुल अंक - 100

कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सातवाँ प्रश्न अनिवार्य है। 15×4=60

1. "चेम्मीन" की भाषा शैली की विशेषताएँ बताइए।

2. "संस्कार" के पात्रों की विश्वसनीयता पर विचार कीजिए।

3. पन्नालाल पटेल की सृजनशीलता का परिचय दीजिए।

4. "जंगल के दावेदार" की प्रासंगिकता का विवेचन कीजिए।

5. एक उपन्यास के रूप में "मानवीनी भवाई" की विशेषताएँ बताइए।

6. विद्वानों द्वारा किए गए संस्कार के मूल्यांकन पर प्रकाश डालिए और अपना भी मंतव्य दीजिए।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10×4=40

    1. यू.आर. अनन्तमूर्ति
    2. कालू का चरित्र
    3. नारणप्पा का चरित्र
    4. महाश्वेता देवी
    5. करुत्तमा का चरित्र

५५